

18/10

पत्रावली देना है। वास्तव में तुम्हारे साथीसमूह  
उपलब्ध नहीं। वास्तव में समाज कागर्भ है। कर्म  
उपलब्ध नहीं। वास्तव में तुम्हारे कर्मों की प्रवृत्ति  
में वह उत्सव हारा व अरुण प्रदीप में समाहित किया  
जाता है। पत्रावली में तुम्हारे उत्सव उत्सव के फल  
हैं तथा वास्तविकता को समझाया है।

